

## आंध्रप्रदेश की वेलापवर्ती मात्स्यिकी संपदाएं

प्रतिभा रोहित, के.राममोहन और एम.एस.सुमित्रुडु

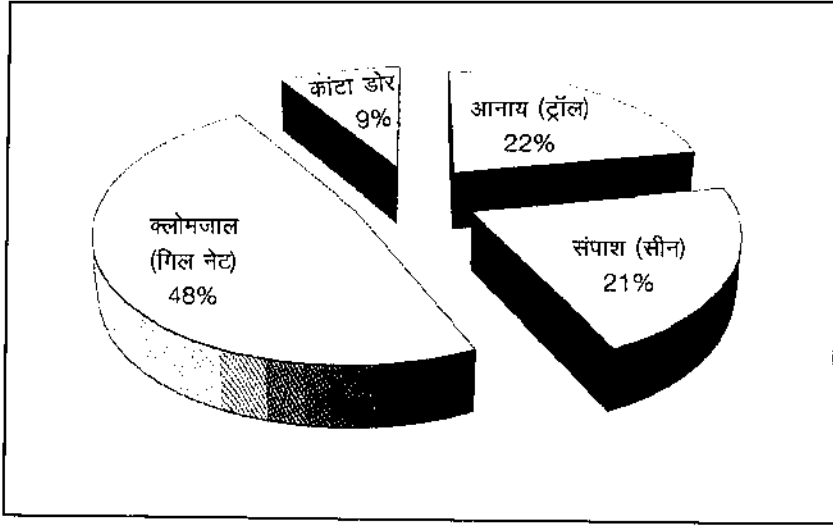
केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान का विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र,  
पांडुरंगपुरम, विशाखपट्टणम, आंध्रप्रदेश

आंध्रप्रदेश की वेलापवर्ती (pelagic) मात्स्यिकी संपदाओं में कुछ मिलीमीटर से लेकर कई मीटरों तक की कुल लंबाई की मछलियाँ पायी जाती हैं। समुद्र के ऊपरितल इन लगभग 250 मीटर की गहराई तक बड़े बड़े झुंडों में वेलापवर्ती मछलियाँ दिखायी पडती हैं। उनकी मात्स्यिकी मौसमिक और वार्षिक उतार-चढ़ाव दृश्यमान होता है और कुछ मछली जातियाँ लंबी दूरी तक प्रवास करती हैं। अरसी के दशक में वेलापवर्ती पख मछलियों का लगभग 45% योगदान हुआ था, जो अब (2000-2007) राज्य की कुल समुद्री मछली पकड का 57% तक बढ़ गया। वर्ष 2007 में यह कुल मछली पकड का 54% और आंध्रप्रदेश के पख मछली अवतरण का 69% तक बन गया।

प्रमुख वेलापवर्ती मछलियों में तारली, बांगडा, ऐंचोवी, फीतामीन (रिबन फिश), करंजिड्स, स्कोम्ब्रोइड्स और अन्य क्लूपिड सम्मिलित हैं। कई प्रकार के संभारों (गिअर) द्वारा इनका संग्रहण किया जाता है और इन संभारों में कुछ मछली झुंडों को पूरी तरह फाँसने के लिए रूपाइत भी हैं। आंध्रा के तटों में परिचालित किए जानेवाले संभारों को संपाश (सीन) क्लोमजाल (गिल नेट), आनाय (ट्रॉल) और कांटा डोर (हूक एंड लाइन) के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। संभार के प्रकार और लक्षित मछली के आधार पर मत्स्यन परिचालन तटीय समुद्र से लेकर समुद्र में कई किलोमीटरों की दूरी तक किया जाता है। संपाशों का परिचालन तट पर छोटी डोंगी के सहारे से और गहरे समुद्र में बड़े अयंत्रिकृत और यंत्रिकृत नावों (बोटसीन) द्वारा किया जाता है। संपाशों को वेलापवर्ती मछली झुंडों को पकडने के लिए विशेष प्रकार से रूपाइत किया गया है और पकडी जाने वाली मछली के आधार पर खुले समुद्र में 5 मीटर की गहराई (तारली, ऐंचोवी, बांगडा) से कई मीटरों की गहराई तक (सुरमई, करंजिड, ट्यूना) संपाशों का परिचालन किया जाता है। वेलापवर्ती मछलियों की पकड के लिए उपयुक्त किए जाने वाला और एक प्रचलित संभार है गिल नेट या क्लोम जाल। जालाक्षि के आकार (मेश साइज़) के अनुसार पकडी जाने वाली मछली के प्रकार और आकार निर्धारित किए जाते हैं। छोटी जालाक्षि के जाल (<20 मि मी) श्वेत बेट, श्वेत तारली और अन्य छोटी क्लूपिडों जैसे छोटी वेलापवर्ती मछलियों की पकड के लिए उपयुक्त किए जाते हैं। लगभग 20-33 मि. मी तक की जालाक्षि के जाल मध्यम आकार की मछलियों (क्लूपिड, तारली, बांगडा, छोटे करंजिड, छोटी सुरमई, छोटी ट्यूना) की पकड के लिए उपयुक्त किए जाते हैं। लगभग 50 मि मी अधिक आकार की जालाक्षि वाले जाल बड़ी सुरमई और ट्यूना को पकडने के लिए उपयुक्त किए जाते हैं। समुद्र में 10 मी से 80 मी तक की गहराई में गिलजालों का परिचालन किया जाता है। समुद्र के नितलस्थ भाग की मछलियों को आनाय जाल द्वारा पकडा जाता है। आनाय जाल के विस्तृत मुँह द्वारा से सभी प्रकार के ऊपरितल तथा नितलस्थ मछलियों को फँसाया जाता है। इस संभार द्वारा फीतामीन, तारली, बांगडा, करंजिड, अन्य क्लूपिड, स्कोम्ब्रोइड मछलियों का अवतरण किया जाता है। तेज़ गति से चलनेवाली वेलापवर्ती मछलियों

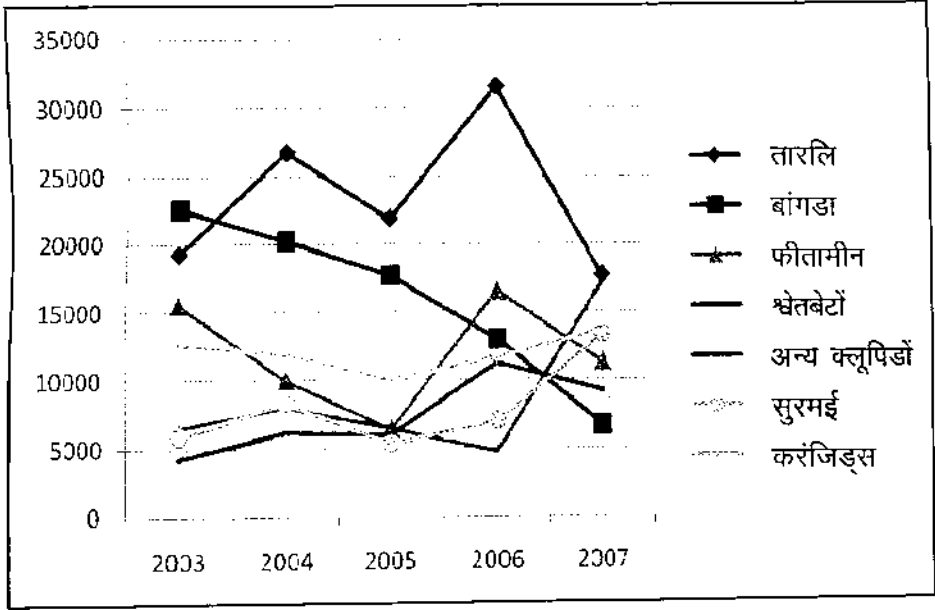
की पकड़ के लिए विशेष तौर पर रूपकाल्पित संभार है कांटा डोर। डोर की लंबाई और कांटों की संख्या लक्षित मछली के अनुसार बदलती जाती हैं। छोटे कांटा डोर (5-8 कांटे प्रति डोर) छोटी तृतीय मछलियों (करंजिड्स, सुरमई, छोटी ट्यूना, उडन मछली) की पकड़ के लिए उपयुक्त किए जाते हैं। लगभग 1000 मीटर तक की लंबाई और 300 कांटे युक्ति डोर महा सागर में बड़े आकार की ट्यूना, बिलफिश, सुरमई, क्यूनाफिश आदि को पकड़ने के लिए परिचालित किए जाते हैं। चित्र 1 में आंध्रप्रदेश की वेलापवर्ती संपदाओं का गिअरवार अवतरण पर विवरण दिया जाता है।

चित्र 1. आंध्रप्रदेश के कुल वेलापवर्ती मछली अवतरण में विभिन्न संभारों का योगदान (%)



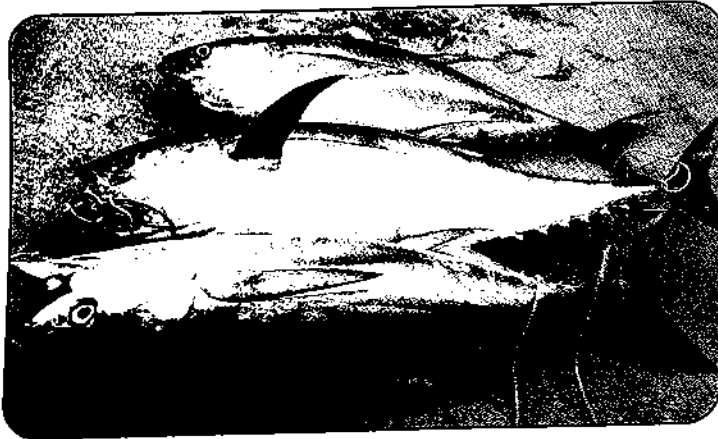
तारलियों में लेस्सर सारडीनों की कई जातियाँ और ओइल सारडीन *सारडिनेल्ला लॉगिसेप्स* सम्मिलित हैं। आंध्रा तट में पायी जाने वाली लेस्सर सारडीनों में *एस. गिबोसा* और *एस. फिन्ब्रिएटा* प्रमुख है। पिछले पांच वर्षों के दौरान तारलियों की पकड़ में तेज़ वृद्धि हुई थी और इसकी झलक कुछ वेलापवर्ति अवतरण में भी दिखाई पड़ी। वर्ष 2003-2007 के दौरान की कुल मछली पकड़ 8.7% थी। इसमें बांगडे की दो जातियाँ *रास्ट्रेलिगर कानागुर्टा* और *आर. फॉन्नी* अधिक मात्रा में पायी गयी जिन में पहली जाति की प्रमुखता थी। तारली और बांगडा दोनों को पश्चिम तट की प्रमुख वेलापवर्ती संपदा मानी जाती थी, अब ये पूर्व तट, विशेषतः आंध्रप्रदेश के प्रमुख घटक बन गए हैं। फीतामीनों में सिर्फ एक जाति *ट्राइक्यूरस लेप्ट्यूरस* मौजूद थी और कुल पकड़ में इसका योगदान 6.1% था। ऐंचोवियों में श्वेतबेटों की कई जातियाँ मौजूद थी और कुल पकड़ में इसका योगदान 5.1% था। *स्टोलिफोरस डेविसी*, *एस. कम्मेर्सोनी* और *एस. इंडिकस* प्रमुख जातियाँ थी। कई वंश और जातियाँ होने वाली करंजिड को वेलापवर्ती ग्रूप का समग्र घटक माना जाता है। इस तट पर परिचालित सभी प्रकार के संभारों द्वारा इनका अवतरण किया जाता है। कुल पकड़ का 6.1% करंजिडों का योगदान था और इन में स्कड्स प्रमुख थी। कुल पकड़ का 4.1% सुरमई का योगदान था जिस में *स्काम्बेरोमोरस कम्मेर्सोनी* और *एस. गट्टाटस* प्रमुख थी और पकड़ का 66% *स्काम्बेरोमोरस कम्मेर्सोनी* थी। वर्ष 2003-2007 के दौरान आंध्रप्रदेश के प्रमुख वेलापवर्ती ग्रूपों के अवतरण की प्रवणता चित्र 2 में दी जाती है।

चित्र 2. आंध्रप्रदेश की प्रमुख वेलापवर्ती मछलियों की अवतरण को प्रवणताएं (टन)



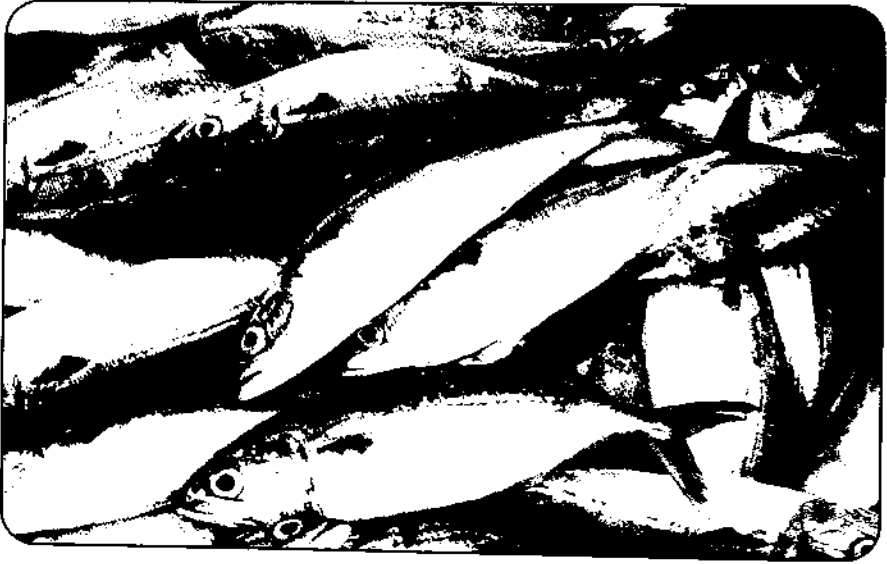
आंध्रप्रदेश की प्रमुख महासागरीय संपदाओं में बिलफिश और ट्यूना विशेषतः येलोफिन ट्यूना (*थ्रस अलबाकारस*) प्रमुख है। इन संपदाओं का वार्षिक अवतरण 6,500 टन आकलित किया गया है और अधिकांश पकड का दक्षिण पूर्व एशियन देशों में निर्यात किया जाता है।

अधिकांश वाणिज्यिक प्रमुख वेलापवर्ती जातियों के प्रभव निर्धारण पर अध्ययन चलाया गया है। तारली, बांगडा और फीतामीन का अनुकूलतम विदोहन किया जाता है, बल्कि एस. गट्टाटस की वर्धित पकड की प्रत्याशा है। येलोफिन ट्यूना की मात्स्यिकी अब नवजात अवस्था पर है, अतः इसकी वर्धित पकड में भी प्रत्याशा की प्रवणता है।



येलोफिन ट्यूना

देश में पौष्टिक खाद्य की आपूर्ति में समुद्री मात्स्यिकी संपदाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है। छोटी वेलापवर्ती मछलियाँ विशेषतः तारली, ऐंचोवि, बांगडा और करंजिड मानव के लिए सस्ता प्रोटीन प्रतिपूरक आहार होने के बावजूद समुद्री व्यवस्था की खाद्य श्रृंखला की अविभाज्य कड़ी भी हैं। कई बड़ी मछलियाँ प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इन छोटी वेलापवर्ती मछलियों को खाती हैं। अपरम्परागत और छोटी वेलापवर्ती मछलियों जो मानव खपत के लिए घरेलू बाजार में नहीं लाई जाती है, को मछली खाद्य में प्रोटीन घटक के रूप में और मुर्गी पालन में खाद्य के रूप में परिवर्तित किया जाता है। बड़ी वेलापवर्ती मछलियों की घरेलू तथा निर्यात बाजार में बड़ी मांग होती है। सुरमई, बांगडा और करंजिडों की घरेलू बाजार में अच्छा भाव मिलता है फिर भी, येलोफिन ट्यूना की कच्ची (हिमशीतित) और संसाधित रूप में बड़ी मांग होती है। इसी प्रकार आंध्रा प्रदेश में खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने और आर्थिक विकास में योगदान करने में वेलापवर्ती मछलियाँ प्रमुख भूमिका निभाती हैं।



बांगडा